



18

अंधेर नगरी



पात्र—महंत, कुँजड़िन, नारायणदास, हलवाई, गोबर्धनदास, शिष्य, राजा, फरियादी, कल्लू बनिया, कारीगर, चूने वाला, भिस्ती, कसाई, गड़रिया, कोतवाल, सिपाही।

स्थान

— शहर से बाहर सड़क

(महंत जी और दो चेले बातें कर रहे हैं)

महंत

— बच्चा नारायणदास, यह नगर तो दूर से बड़ा सुंदर दिखाई पड़ता है। देख, कुछ भिक्षा मिले तो भगवान को भोग लगे।

नारायणदास

— गुरु जी महाराज, नगर तो बहुत ही सुंदर है, पर भिक्षा भी सुंदर मिले तो बड़ा आनंद हो।

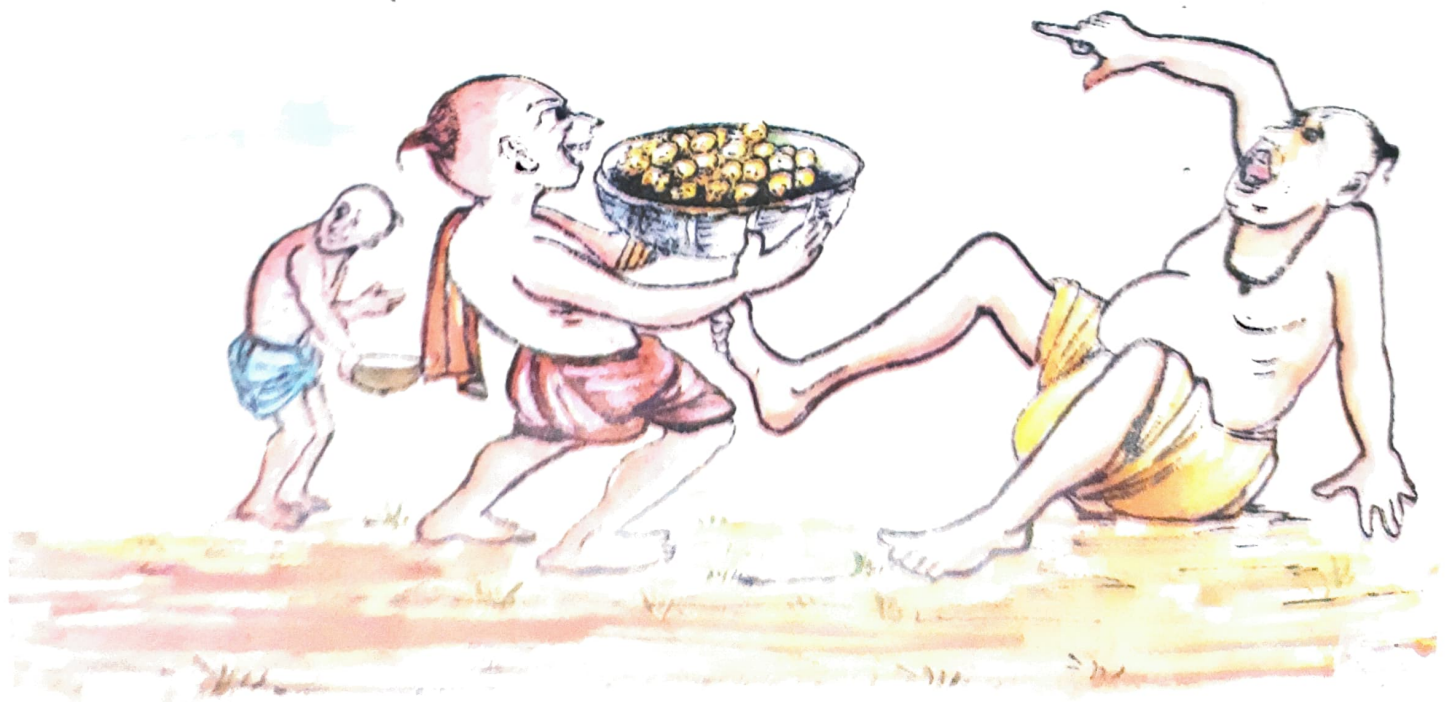
महंत

— बच्चा गोबर्धनदास, तू पश्चिम की ओर जा और नारायणदास पूर्व की ओर जाएगा।

(गोबर्धनदास जाता है)



- गोबर्धनदास — (कुँजड़िन से) क्यों, भाजी क्या भाव है ?
- कुँजड़िन — बाबा जी, टके सेर।
- गोबर्धनदास — सब भाजी टके सेर ! वाह ! वाह ! बड़ा आनन्द है। यहाँ सभी चीजें टके सेर।
(हलवाई के पास जाकर) क्यों भाई हलवाई, मिठाई क्या भाव।
- हलवाई — टके सेर।
- गोबर्धनदास — वाह ! वाह ! बड़ा आनंद है। सब टके सेर। क्यों बच्चा, इस नगरी का नाम क्या है ?
- हलवाई — अंधेर नगरी।
- गोबर्धनदास — और राजा का नाम क्या है ?
- हलवाई — अनबूझ राजा।
- गोबर्धनदास — वाह ! वाह !
अंधेर नगरी अनबूझ राजा,
टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।
- हलवाई — तो बाबा जी, कुछ लेना हो ले लें।
- गोबर्धनदास — बच्चा, भिक्षा माँग कर सात पैसा लाया हूँ, साढ़े तीन सेर मिठाई दे दे।
(महंत जी और नारायणदास एक ओर से आते हैं और दूसरी ओर से गोबर्धनदास आता है)
- महंत — बच्चा गोबर्धनदास, क्या भिक्षा लाया, गठरी तो भारी मालूम पड़ती है।



गोबर्धनदास - गुरु जी महाराज, सात पैसे भीख में मिले थे, उसी से साढ़े तीन सेर मिठाई मोल ली है।

महंत - बच्चा, नारायणदास ने मुझसे कहा था कि यहाँ सब चीजें टके सेर मिलती हैं, तो मैंने इसकी बात का विश्वास नहीं किया। बच्चा, यह कौन-सी नगरी है और इसका कौन सा राजा है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर खाजा मिलता है।

गोबर्धनदास - अंधेर नगरी अनबूझ राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।

महंत - तो बच्चा, ऐसी नगरी में रहना उचित नहीं है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर खाजा बिकता है। मैं तो इस नगर में अब एक क्षण भी नहीं रहूँगा।

गोबर्धनदास - गुरु जी, मैं तो इस नगर को छोड़कर नहीं जाऊँगा और जगह दिन भर माँगो तो भी पेट नहीं भरता। मैं तो यहीं रहूँगा।

महंत - देख मेरी बात मान, नहीं तो पीछे पछताएगा। मैं तो जाता हूँ पर इतना कहे जाता हूँ कि कभी संकट पड़े तो याद करना (यह कहते हुए महंत चले जाते हैं।)

(राजा, मंत्री और नौकर लोग यथास्थान बैठे हैं। पर्दे के पीछे 'दुहाई हैं' का शब्द होता है।)

राजा - कौन चिल्लाता है, उसे बुलाओ तो।

(दो नौकर एक फरियादी को लाते हैं)

फरियादी - दुहाई ! महाराज, दुहाई।

राजा - बोलो क्या हुआ ?

फरियादी - महाराज, कल्लू बनिये की दीवार गिर पड़ी, सो मेरी बकरी उसके नीचे दब गई। न्याय हो।

राजा - कल्लू बनिये को पकड़ लाओ।



(नौकर लोग दौड़कर बाहर से बनिये को पकड़ लाते हैं)

- राजा — क्यों रे बनिये, इसकी बकरी क्यों दब कर मर गई ?
- कल्लू — महाराज मेरा कुछ दोष नहीं। कारीगर ने ऐसी दीवार बनाई कि गिर गई।
- राजा — अच्छा, कल्लू को छोड़ दो, कारीगर को पकड़ लाओ।
(कल्लू जाता है। लोग कारीगर को पकड़ लाते हैं)
- राजा — क्यों रे कारीगर, इसकी बकरी कैसे मर गई ?
- कारीगर — महाराज, चूने वाले ने चूना ऐसा खराब बनाया कि दीवार गिर पड़ी।
- राजा — अच्छा, उस चूने वाले को बुलाओ।
(कारीगर निकाला जाता है। चूने वाला पकड़ कर लाया जाता है)
- राजा — क्यों रे चूने वाले, इसकी बकरी कैसे मर गई ?
- चूने वाला — महाराज, भिंती ने चूने में पानी ज्यादा डाल दिया, इसी से चूना कमजोर गया।
- राजा — तो भिंती को पकड़ो।
(भिंती लाया जाता है)
- राजा — क्यों रे भिंती, इतना पानी क्यों डाल दिया कि दीवार गिर पड़ी और बकरी दब गई ?
- भिंती — महाराज, गुलाम का कोई कसूर नहीं, कसाई ने मसक इतनी बड़ी बना दी कि उसमें पानी ज्यादा आ गया।
- राजा — अच्छा, भिंती को निकालो, कसाई को लाओ।
(लोग भिंती को निकालते हैं। कसाई को लाते हैं)
- राजा — क्यों रे कसाई, तूने ऐसी मसक क्यों बनाई ?
- कसाई — महाराज, गड़रिये ने टके की ऐसी बड़ी भेड़ मेरे हाथ बेची कि मसक बह बन गई।
- राजा — अच्छा, कसाई को निकालो, गड़रिये को लाओ।
(कसाई निकाला जाता है। गड़रिया लाया जाता है)
- राजा — क्यों रे गड़रिये, ऐसी बड़ी भेड़ क्यों बेची ?
- गड़रिया — महाराज, उधर से कोतवाल की सवारी आई, उसकी भीड़-भाड़ के कारण मैं छोटी-बड़ी भेड़ का ख्याल ही नहीं किया, मेरा कुछ कसूर नहीं।
- राजा — इसको निकालो, कोतवाल को पकड़ कर लाओ।



(कोतवाल को पकड़ कर लाया जाता है)

राजा

- क्यों रे कोतवाल, तूने सवारी धूमधाम से क्यों निकाली कि गड़रिये ने घबराकर बड़ी भेड़ बेच दी ?

कोतवाल

- महाराज, मैंने कोई कसूर नहीं किया।
- कुछ नहीं महाराज, महाराज। ले जाओ, कोतवाल को अभी फाँसी दे दो।
(सभी कोतवाल को पकड़ कर ले जाते हैं)
(गोबर्धनदास बैठा मिठाई खा रहा है)

गोबर्धनदास

- गुरु जी ने हमको नाहक यहाँ रहने को मना किया था। माना कि देश बहुत बुरा है, पर अपना क्या? खाते-पीते मस्त पड़े हैं।
(चार सिपाही चार ओर से आकर उसको पकड़ लेते हैं)

सिपाही

- चल बे चल, मिठाई खाकर खूब मोटा हो गया है। आज मजा मिलेगा।

गोबर्धनदास

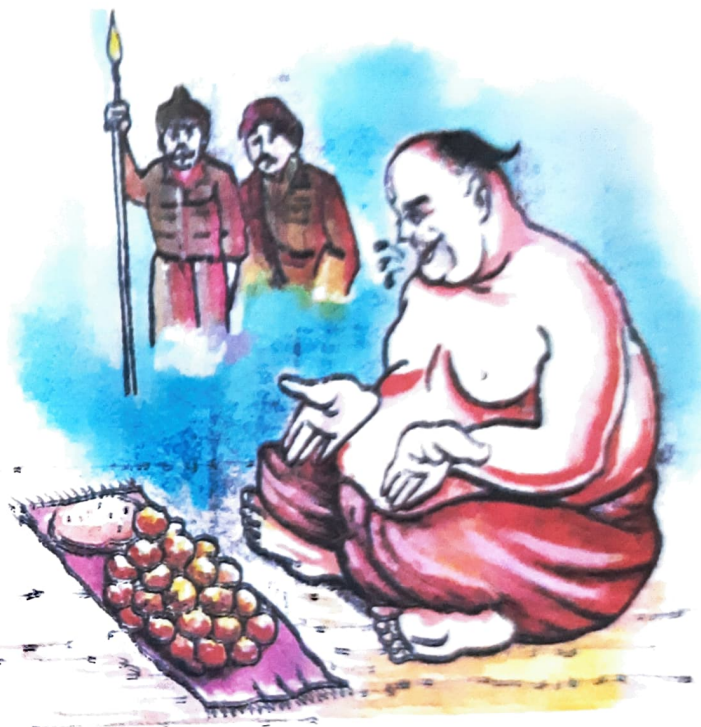
- (घबड़ाकर) हैं, यह आफत कहाँ से आई, अरे भाई, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो मुझे पकड़ते हो?

सिपाही

- बात यह है कि कल कोतवाल को फाँसी का हुक्म हुआ था। जब उसे फाँसी देने को ले गए तो फाँसी का फंदा बड़ा निकला क्योंकि कोतवाल साहब दुबले हैं। हम लोगों ने महाराज से अर्ज की। इस पर हुक्म हुआ कि किसी मोटे आदमी को फाँसी दे दो, क्योंकि बकरी मरने के अपराध में किसी न किसी को सजा होना जरूरी है, नहीं तो न्याय न होगा।

गोबर्धनदास

- दुहाई परमेश्वर की ! अरे मैं नाहक मारा जाता हूँ। अरे यहाँ बड़ा ही अंधेरा है। गुरु जी तुम कहाँ हो, आओ मेरे प्राण बचाओ !



- (गोबर्धनदास चिल्लाता है, सिपाही उसे पकड़कर ले जाते हैं)
- गोबर्धनदास — हाय बाप रे! मुझे बेकसूर ही फाँसी देते हैं।
- सिपाही — अबे, चुप रह, राजा का हुक्म भला कहीं टल सकता है।
- गोबर्धनदास — हाय! मैंने गुरु जी का कहना न माना, उसी का यह फल है। गुरु जी, कहीं हो बचाओ, गुरु जी ! गुरु जी !
- महंत — अरे बच्चा गोबर्धनदास, तेरी यह क्या दशा है ?
- गोबर्धनदास — (हाथ जोड़कर) गुरु जी, दीवार के नीचे बकरी दब गई, जिसके लिए मुझे फाँसी दी जा रही है। गुरु जी, बचाओ।



- महंत — कोई चिंता नहीं, (भौंह चढ़ाकर सिपाहियों से) सुनो, मुझे शिष्य को अंतिम उपदेश देने दो। (सिपाही उसे थोड़ी देर के लिए छोड़ देते हैं, गुरु जी चले को कान में समझाते हैं)
- गोबर्धनदास — तब तो गुरु जी, हम अभी फाँसी चढ़ेंगे।
- महंत — नहीं बच्चा, हम बूढ़े हुए, हमको चढ़ने दे।
(इस प्रकार दोनों हुज्जत करते हैं। सिपाही लोग परस्पर चकित होते हैं। राजा, मंत्री और कोतवाल आते हैं)
- राजा — यह क्या गोलमाल है ?
- सिपाही — महाराज, चेला कहता है मैं फाँसी चढ़ूँगा, गुरु कहता है मैं चढ़ूँगा। कुछ मालूम नहीं पड़ता कि क्या बात है ?





- राजा — (गुरु से) बाबा जी, बोलो। आप फाँसी क्यों चढ़ते हैं ?
 महंत — राजा, इस समय ऐसी शुभ घड़ी में जो मरेगा, सीधा स्वर्ग जाएगा।
 मंत्री — तब तो हम ही फाँसी चढ़ेंगे।
 गोबर्धनदास — नहीं, हम। हमको हुक्म है।
 कोतवाल — हम लटकेंगे, हमारे सबब से तो दीवार गिरी।
 राजा — चुप रहो सब लोग। राजा के जीते जी और कौन स्वर्ग जा सकता है? हमको फाँसी चढ़ाओ, जल्दी-जल्दी करो। (राजा को लोग फाँसी पर लटका देते हैं) पर्दा गिरता है।

— भारतेंदु हरिश्चंद्र

(‘अंधेर नगरी’ नाटक का संक्षिप्त अंश)



भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850–1885) ने नाटक, कविता, निबंध, आख्यान आदि लिखकर खड़ी बोली हिंदी का विकास किया। इनकी रचनाओं में भारत जननी, अंधेर नगरी, सुलोचना, मुद्राराक्षस, कश्मीर कुसुम आदि प्रमुख हैं। इन्होंने अनेक पत्रों का भी प्रकाशन किया।



शब्दार्थ

टका	=	ताँबे का पुराना सिक्का	गुलाम	=	दास, नौकर
कसूर	=	अपराध, दोष, गलती	भाजी	=	साग-सब्जी
हुज्जत	=	विवाद, बहस, झगड़ा	सबब	=	कारण

1. बोध प्रश्न — उत्तर लिखिए

- अंधेर नगरी के सभी पात्रों के नाम बताइए ।
- महंत अंधेर नगरी को क्यों छोड़कर चला गया ?
- शिष्य गोबर्धनदास अपने गुरु के साथ क्यों नहीं लौटा ?
- सिपाही गोबर्धनदास को क्यों फाँसी देना चाहते थे ?
- गोबर्धनदास की जान कैसे बची ?
- इस एकांकी में किन-किन बातों पर व्यंग्य किया गया है ?

2. सोच-विचार : बताइए —

- बकरी के मरने का असली दोषी कौन था ?
- नगर को अंधेर नगरी क्यों कहा गया है ?

3. अनुमान और कल्पना —

महंत ने अपने शिष्य के कान में क्या कहा होगा, जिसके फलस्वरूप कोतवाल मंत्री और राजा सबके सब स्वयं फाँसी पर चढ़ने के लिए उतावले हो गए ।

4. भाषा के रंग

(क) रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक से उपयुक्त शब्द चुन करके कीजिए —

- नगर तो बड़ा सुंदर है पर भी सुंदर मिले तो बड़ा आनंद हो । (भोग, रुपये, कपड़े, भिक्षा)
- सात पैसे भीख में मिले थे उसी से मिठाई मोल ली है । (तीन सेर, साढ़े तीन किलो, साढ़े तीन सेर)
- अंधेर नगरी राजा, टके सेर भाजी, टके सेर । (मंत्री, मिठाई, खाजा, सिपाही, अनबूझ राजा)
- इस समय ऐसी शुभ घड़ी में जो मरेगा जाएगा । (नरक, सीधा शहर, सीधा स्वर्ग, सीधे अपने घर)

(ख) नीचे लिखे शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए -

दिवार, गोबर्धनदास, गणेरिया, भिस्ती, फाँसी, हूज्जत, महंथ

(ग) निम्नलिखित विशेषण और विशेष्य शब्द दिए गए हैं उनके सही जोड़े बनाइए-

विशेषण- सुंदर, टका सेर, चौपट, अंधेर, बड़ी, शुभ

विशेष्य- भेड़, राजा, नगरी, घड़ी, नगर, भाजी

तुम्हारी कलम से -

इस एकांकी से हमें क्या सीख मिलती है ? संक्षेप में लिखिए।

अब करने की बारी

(क) एकांकी को कहानी के रूप में लिखिए

(ख) एकांकी का कक्षा में अभिनय कीजिए।

(ग) नीचे लिखी कथा को ध्यान से पढ़िए -

एक आदमी की भेंट एक देवता से हो गई। वह देवता के सामने अपना दुखड़ा रोने लगा। देवता ने उँगली से एक पत्थर की ओर इशारा किया। पत्थर सोने का बन गया, पर सोने का पत्थर मिलने के बाद भी वह आदमी संतुष्ट न हुआ। देवता ने उँगली से एक मूर्ति की ओर इशारा किया। मूर्ति भी सोने की बन गई। उस आदमी को फिर भी संतोष न हुआ। देवता ने पूछा-“तुम आखिर चाहते क्या हो ?” उस आदमी ने कहा, “क्या आप मुझे अपनी उँगली दे सकते हैं ?”

● इस कहानी का उचित शीर्षक लिखिए।

● सही विकल्प पर ✓ निशान लगाइए -

आदमी ने देवता से उँगली माँगी क्योंकि -

(क) उस आदमी के उँगली न थी। ()

(ख) उस आदमी को सन्तोष न था। ()

(ग) वह उँगली सोने की थी। ()

मेरे दो प्रश्न : पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

1.

2.

इस पाठ से -

(क) मैंने सीखा -

(ख) मैं करूँगी/करूँगा -